

राष्ट्रदूत

स्थापना दिवस पर विशेष समर्पण

01-08-2026

हिण्डौन सिटी

3

राजेश शर्मा

सम्पादक

राष्ट्रदूत



सुमन दुबे, इकॉनमिस्ट, लेखक, जर्नलिस्ट, इंडिया टुडे को स्थापित करने वाली टीम के सदस्य तथा मुख्यधारा के अखबार, इण्डियन एक्सप्रेस, हिन्दुस्तान टाइम्स के पूर्व स्तम्भकार, राजीव गांधी के दून स्कूल के सहपाठी व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की ओरिजिनल टीम व थिंक टैंक के सदस्य कहते थे, “राजस्थान अखबारों का कनि्त्रस्तान है।” शायद नवयुग, लोकवाणी आदि का उदाहरण उनके दिमाग में रहा होगा, पर उनका कथन किसी हद तक सही ही था।

शायद इस बात का कुछ आभास हजारी बाबू को भी था, अतः “राष्ट्रदूत” प्रकाशित करने के लिए उनकी “फर्स्ट चॉइस” जयपुर नहीं बैंगलोर थी और उन्होंने बैंगलोर से हिन्दी में नहीं, अंग्रेजी में अखबार निकालने का मन बनाया। यह और कहानी है कि, कैसे जयनारायण व्यास, जो उनके लिए गुरुतुल्य व पिता तुल्य शक्ति्मय थे, ने हजारी बाबू का अखबार के बारे में “सोच” व मन बदला, और राष्ट्रदूत शुरू किया हजारी बाबू ने एक अगस्त 1951 को जयपुर से।

राष्ट्रदूत कभी सरकार का लाइला नहीं बन सका, चाहे किसी गुट का या पार्टी का शासन रहा हो। राष्ट्रदूत के प्रति सरकारों का रुख सदा खुली “शत्रुता” और बैरूखी बर्दाश्त करने की सीमा के बीच ही झूलता रहा

आज सत्तर साल से राष्ट्रदूत खड़ा है, राजस्थान की वीर भूमि पर। फिर भी सुमन दुबे जैसे बड़े स्तम्भकारों व सम्पादकों का यह सोच भी किसी हद तक सही था कि, राजस्थान की घरती अखबारों के लिए खास उर्वरक नहीं है। क्योंकि 1950 से, अगर गिना जाए तो, कई अखबार आये और दफन होकर चले गये। जैसे वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक व राजस्थान के पूर्व मु.मंत्री हीरालाल शास्त्री का समाचार पत्र लोकवाणी और सुखाड़िया के राजनीतिक व प्रशासनिक सोच के प्रथम वफादार, जो बाद में कई बार मुख्यमंत्री रहे, हर देन जोशी से शुरु करवाया गया अखबार नवयुग, जिसके प्रबंध संपादक थे आर के मिश्रा, जो दिल्ली के चूक जाने–माने पत्रकार, पेट्रिअट अखबार के संपादक तथा रिलायन्स ग्रुप थिंक टैंक ओ.ए. आर. एफ. के संस्थापक व संचालक भी थे।

बहरहाल राजस्थान में मुख्य धारा से जुड़े इन दोनों अखबारों से भिन्न राष्ट्रदूत शायद इसलिए जीवित रह गया क्योंकि राष्ट्रदूत कभी सरकार का लाइला नहीं बन सका, चाहे किसी गुट का या पार्टी का शासन रहा हो। राष्ट्रदूत के प्रति सरकारों का रुख सदा खुली “शत्रुता” और बैरूखी बर्दाश्त करने की सीमा के बीच ही झूलता रहा, हालाँकि यह सच है कि, जयनारायण व्यास को इस बात व तर्क से प्रभावित होकर कि “अखबार बाजी व आतिशबाजी का एक ही सिद्धान्त होता है, घर के आंगन में की जाती है, जिससे घर वाले, परिवार वाले, परिजन व मोहल्ले वाले उसका आन्द ले सकें”, 1949 में अखबार शुरु करने हजारी बाबू कलकत्ता से जयपुर आए थे। पर जैसे गुरु जैसे ही चेला, अखबार को शुरु होने में दो साल लग गये। हालाँकि मशीनों, कम्पोजिंग में काम आने वाले टाइप, पेज बनाने के फर्में, एक वेगन कामज, हजारीबाबू कलकत्ता से साथ लाये थे। कम्पोजिटर्स का जत्था मूलतः मैथिल ब्राह्मणों का था ये लोग कलकत्ता में हिन्दी की पुस्तकें छापने वाले प्रिंटिंग प्रेसों में काम करते थे। सम्पादकीय विभाग में भी कई महारथी, जैसे शिवपूजन त्रिपाठी, दिनेश खरे, कालीचरण पांडेय आदि, बनारस के “आज” अखबार या आगरा के “उजाला” से लाये गये थे। कुछ स्थानीय प्रतिभा को भी हुंदकर जोड़ा गया सम्पादकीय विभाग में, जैसे, सुमनेश जोशी, श्रीगोपाल पुरोहित, कैलाश मिश्रा, विशान सिंह शेखावत, मास्टर हरी प्रसाद शर्मा, हरमल सिंह, कौशल किशोर, जो दिल्ली के चूक जाने–माने पत्रकार, पेट्रिअट अखबार के संपादक तथा रिलायन्स ग्रुप थिंक टैंक ओ.ए. आर. एफ. के संस्थापक व संचालक भी थे।

बहाविकल ही है, इस बहु प्रतिभाशाली, कई मतों वाली टीम को एक साथ रखकर अखबार निकालना काफी टेढ़ी खीर था और समय लेने वाला धैर्य का काम था। अखबार छापने के बाद, उसे जनता तक पहुंचाना भी असान क्लन नहीं था। दो ही बड़े न्यूज पेपर एजेन्ट से, चांदपोल वाले चौंघ महाराज, जो हिन्दुस्तान टाइम्स पब्लिकेशन के सोल एजेन्ट थे तथा जौहरी बाजार स्थित रॉयल स्टोर, जो

टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप के वितरक थे।

जब दोनों से हजारी बाबू ने संपर्क किया, सुबह चार–पांच बजे तक छपने वाले राष्ट्रदूत को कम से कम छः बजे तक ग्राहक तक पहुंचाने के लिए, तो टका सा जवाब मिला, “आपके अखबार में क्या खास बात है, जो सुबह उठते ही लोग पढ़ेंगे। सुबह का समय पूजा–पाठ, परिवार में बैठकर बातचीत करने का व ऑफिस और धंधे पर जाने की तैयारी का होता है।दिल्ली के अखबार 11–11.30 तक टेन से आते हैं जिन्हें हम शाम तक घरों पर “डिस्ट्रीब्यूट” कर देते हैं और शाम को ऑफिस से लौट कर लोग तसल्ली से पढ़ते हैं।” थक–हार कर, नये हॉकरों की टीम तैयार की गयी, जो सुबह –सुबह पाठकों तक अखबार की प्रति पहुंचा दे। अधिकतर ये नये हॉकर सरकारी दफ्तरों में काम करने वाले चपरासी आदि थे।

अखबार को “पॉपुलर” करने के लिए हजारी बाबू साइकिल से पुरानी बस्ती, रामगंज आदि रिहायशी कॉलोनियों में घूमे, अपना परिचय दिया कि, कैसे वे कलकत्ता से आये हैं अखबार निकालने तथा उनका सहयोग मांगा खबरों के लिए और कॉपीयां खरीदने का अनुरोध किया।

मेहतन रंग लायी, पर दो साल लग गये अखबार जनता तक पहुंचाने में। उसके बाद लगभग एक सप्ताह में तीन बार मु.मंत्री व्यास का सुबह छः बजे फोन आता, हजारी बाबू को ललकारते हुए, “क्या यह अखबार निकालने के लिए कलकत्ता से आये थे, चार दिन से एक भी सरकार विरोधी खबर नहीं है, राष्ट्रदूत है या राजदूत।”

राष्ट्रदूत के जन्म से द्वितीय विश्व युद्ध का

अखबार की “पॉपुलर” करने के लिए हजारी बाबू साइकिल से पुरानी बस्ती, रामगंज आदि रिहायशी कॉलोनियों में घूमे, अपना परिचय दिया कि, कैसे वे कलकत्ता से आये हैं अखबार निकालने

अजीबोगरीब संबंध था। 1940 के दशक में जापानी फौजें, बर्मा से चढ़ते हुए इफ़ाल तक पहुंच गयी थीं, तथा कलकत्ता पर जापानी लड़ाकू वायुयान कई “सॉर्टी” कर चुके थे। अफवाहों का बाजार गर्म था, कि जापानी यान कभी भी बमबारी कर सकते हैं। मारबोड़ी व्यापारी कलकत्ता खाली करने लगे थे। हजारी बाबू के पिता व चाचा, बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के संस्थापक बन्यु, भी कलकत्ता छोड़ने का प्लान बनाने लगे थे। इस “आक्रमण” की दृष्टि

ठठी, स्वाभिमानी, सिद्धान्त के मामले में कोई समझौता नहीं करने वाला राष्ट्रदूत का पत्रकार हरदम अलग सा रहा। जिसे पूरी तरह से न तो राजनीतिज्ञ, न राजनेता और न ही अफसरशाही ही समझ पाई। अतः राष्ट्रदूत से इन लोगों का रिश्ता कभी खट्टा कभी मीठा, पर कभी भी आरामदेह (कम्फर्टबल) नहीं रहा।

से जयपुर सेफ माना गया, तथा जयपुर में हर्दिय्यों के रास्ते में गोधों के चौक में, एक बड़ी हवेली तथा जौहरी बाजार में दो दुकानें खरीदी गयीं, जयपुर से व्यापार चलाने की दृष्टि से। जापानियों के आने की भगदड़ में, ब्रिटिश इन्फॉर्मेशन सर्विस ने अपना प्रचार तंत्र घटाना शुरू कर दिया था। ब्रिटिश इन्फॉर्मेशन सर्विस दक्षिण पूर्वी एशिया में अंग्रेजी सल्लनत के प्रचार तंत्र का स्तम्भ था।कलकत्ते में उनका विशाल, आधुनिक प्रेस था, जहां दक्षिण पूर्वी एशिया के लिए सारी प्रचार सामग्री छपती थी। “वाइलडिंग अग्र प्रक्रिया” के तहत, इस विशाल, प्रेस को बेचने के लिए टेण्डर आमंत्रित किया गये। पर, जब टेण्डर देने की अंतिम तारीख आयी, शहर में साम्प्रदायिक दंगे फैल गये। लेकिन हजारी बाबू अपना ऑफर वाला टेण्डर भर चुके थे। दंगे के कारण दूसरा कोई टेण्डर नहीं मिला गया।

स्वाभाविक ही है, इस बहु प्रतिभाशाली, कई मतों वाली टीम को एक साथ रखकर अखबार निकालना काफी टेढ़ी खीर था और समय लेने वाला धैर्य का काम था। अखबार छापने के बाद, उसे जनता तक पहुंचाना भी असान क्लन नहीं था। दो ही बड़े न्यूज पेपर एजेन्ट से, चांदपोल वाले चौंघ महाराज, जो हिन्दुस्तान टाइम्स पब्लिकेशन के सोल एजेन्ट थे तथा जौहरी बाजार स्थित रॉयल स्टोर, जो

“राष्ट्रदूत एक जञ्जा है, एक जुनुन है, एक सीव है, एक “थॉट” है। एक शेर है, जिसे ढोहराया जा संकता है, जिसे नापसंद भी किया जा संकता है, पर, उसकी हस्ती मिटायी नहीं जा सकती। राष्ट्रदूत केवल मशीनों, कम्प्यूटर, बिडिंग नहीं है। उसे तंग तो किया जा संकता है, स्वतन्त्र नहीं किया जा संकता, केवल प्रशासनिक ढबावों से, अथ से।

हजारी बाबू ने रकम वापस कर दी तथा अपना प्रकाशन, जनवाणी प्रिन्टर्स शुरू किया। बाकी बची, कुछ मशीनों को लेकर हजारी बाबू जयपुर आये थे, राष्ट्रदूत खोलने।

उस समय जयपुर में कोई स्थापित अखबार नहीं था, अतः हॉकर होने का सवाल ही नहीं उठता था। बड़ी मुश्किलों से, काफी समझाश्रि के बाद हिन्दुस्तान टाइम्स व टाइम्स ऑफ इंडिया के एजेंटों को राजी किया, सुबह पांच बजे अखबार बांटने के लिए।

अखबार की पहचान बनाने के लिए, दिन भर साइकिल पर, हजारी बाबू ने जयपुर के सभ्रान्त नागरिकों के यहां चक्कर लगाकर घूम–घूम के अखबार का व स्वयं का परिचय दिया। मुन्नालाल मिश्र के नेतृत्व में मैथिल ब्राह्मणों की कम्पोजिटरों की प्रारम्भिक टीम कलकत्ता से साथ आई थी, बाबूलाल मशीन मैन व उनके सहयोगी, जनवाणी प्रिन्टर्स से आए थे। गवर्मेण्ट प्रेस बीकानेर के मशीन मैन हरिसिंह, शैतान सिंह, गोवर्धन सिंह आदि ने अखबार प्रिन्टर्स की मशीनों को ठोक बजाकर चलाने का जिम्मा संभाला। परंतु एडिटोरियल (जिसे राष्ट्रदूत का स्टोप, पता नहीं क्यों हड़डी तोड़यल भी कहता था) की शुरु की मूल टीम में कलकत्ता की हिन्दी प्रचारिणी सभा के लोग थे। उनमें से ज्यादातर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के युवा लोग थे। जांबाज एवं उस समय के फैशन के अनुसार वामपंथी विचारधारा वाले, जैसे, शिवपूजन त्रिपाठी, दिनेश खरे, सिद्धान्त तिवाड़ी, कालीचरण पाण्डेय, आनंद माधव मिश्रा आदि। लोकल टेलैन्ट (स्थानीय प्रतिभा) को धीरे–धीरे, परख–परख कर, हजारी बाबू अपने नवरत्नों में विभिन्न स्तर पर जोड़ते चले गये, मोहन लाल गुप्ता, कमल किशोर जैन, चन्द्रगुप्त वार्धेय (सम्पादक) सौभागमल जैन, युगल किशोर चतुर्वेदी (रामपटकर), तारा प्रकाश जोशी, जयसिंह एस. राठौड़, प्रकाश भण्डारी, कौशल किशोर भार्गव आदि। बाहरी लोगों का बुद्धमत था, “स्थानीय टेलैन्ट” की तुलना में। यह व्यवस्था शायद लाभदायक व अवश्यक थी, उस समय, राजस्थान में प्रकाशिता व पढ़ाई–लिखाई की पुरानी स्थापित परम्परा न होने के कारण, पर, स्थानीय प्रतिभा का धीरे–धीरे समावेश हुआ, जिसका लाभ, बाद में जयपुर में आये अखबारों, राजस्थान पत्रिका, नवज्योति, भास्कर आदि को मिला। बाहरी व स्थानीय के मिश्रण ने अनूठी पहचान बनायी,

तथा उनसे कहा, “आपका परिवार, पुराना कांग्रेसी परिवार है, “इन्डिपेन्डैंस मूवमेंट” (स्वतंत्रता संग्राम) से भी पहले से। पर, हजारी बाबू, मेरी सरकार (कांग्रेस की सरकार) के खिलाफ हैं। हजारी बाबू की तरह मैं भी आपके पुत्र के समान हूँ। हमारे बीच झगड़े की कोई वजह नहीं। हमारा झगड़ा खत्म करवाइये।” जोशी जी ने भी कूटनीतिक अंदाज में जवाब दिया “दो भाईयों के झगड़े में बड़ों का बोलना उचित नहीं होता।”

सुखाड़िया जी ने फिर उद्योगपति जोशी की दुःखती रा पर हाथ रख़ा और तर्क दिया, “राष्ट्रदूत में कोई कमाई नहीं है, घाटे का सौदा है। आप कोटा आकर बड़ा उद्योग लगाइये, अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप।” यह तर्क काम कर गया, जोशी जी ने पीछा शुरू कर दिया अपने पुत्र का, और सुखाड़िया के “ऑफ़र” पर आमल करने का दवाब बनाने लगे। सैकड़ों चिट्ठियां लिखी हजारी बाबू को, और हर सर्दियों में अपने गांव कौसलों में वार्षिक प्रवास पर आने पर यह व्यक्तिगत प्रयास जारी रक्खा।

चौथे–पाँचवें वार्षिक प्रवास के दौरान थक हार कर हजारी बाबू ने कह दिया, “आप जैसा कहेंगे, वैसा ही करूंगा। पर पहले बता दें किस दल से राष्ट्रदूत का प्रकाशन बंद कर दूँ। कह ही राज्य में, अखबार भी चले और अपना उद्योग भी चलाऊँ यह संभव नहीं हो पायेगा।” इस कथन से उद्योग लगाने वाला संवाद ठही, स्वाभिमानी, सिद्धान्त के मामले में कोई समझौता नहीं करने वाला राष्ट्रदूत का पत्रकार हरदम अलग सा रहा। जिसे पूरी तरह घटाना शुरू कर दिया था। ब्रिटिश इन्फॉर्मेशन सर्विस दक्षिण पूर्वी एशिया में अंग्रेजी सल्लनत के प्रचार तंत्र का स्तम्भ था।कलकत्ते में उनका विशाल, आधुनिक प्रेस था, जहां दक्षिण पूर्वी एशिया के लिए सारी प्रचार सामग्री छपती थी। “वाइलडिंग अग्र प्रक्रिया” के तहत, इस विशाल, प्रेस को बेचने के लिए टेण्डर आमंत्रित किया गये। पर, जब टेण्डर देने की अंतिम तारीख आयी, शहर में साम्प्रदायिक दंगे फैल गये। लेकिन हजारी बाबू अपना ऑफर वाला टेण्डर भर चुके थे। दंगे के कारण दूसरा कोई टेण्डर नहीं मिला गया।

पत्रकार व खबरनवीस को कभी मित्र, कभी विरोधी और सदा “अकम्फर्टबल सवाल” करने वाला माना जाता है, और उसकी “उपयोगिता” के अनुसार उससे व्यवहार होता है। उपयोगिता उस समय के राजनीतिक (परसीव्ड) हित, से आंकी जाती है।

और, मजे की बात यह है कि, राष्ट्रदूत से अपने अजीबोगरीब संबंध को किसी मु.मंत्री ने कैसे “टैकल” किया (निभाया) यह उस राजनेता की स्वयं की “पर्सनैलिटी” व मनःस्थिति पर निर्भर रहा। मु.मंत्री सुखाड़िया ने अपने सत्रह साल के शासन के प्रारम्भिक दिनों में पहले राष्ट्रदूत से राजनीतिक तरीके से निपटने का प्रयास किया। नवयुग अखबार शुरू करवाया, राष्ट्रदूत से मुकाबले के लिए, जिसके सम्पादक थे हरदेव जोशी। हजारी बाबू, स्वयं कांग्रेस में पूर्णतया सक्रिय नेता थे, तथा विधायक भी थे। अतः राष्ट्रदूत में सबसे पहले कांग्रेस की अंदर की खबर छपती थी। नवयुग सुखाड़िया समर्थक होने की वजह से, इतनी निर्भीकता से ये खबरें व विश्लेषण नहीं दे पाता था, अतः पी.सी.सी. में बाकायदा सोच बना कि, कांग्रेस पार्टी में

सक्रिय नेता व राजनीतिज्ञ, जो वरिष्ठ पदाधिकारी भी हैं, किसी भी अखबार से सम्पादक के रूप में सम्बद्ध नहीं होंगे, क्योंकि, इससे अन्दर की बातें लीक होती हैं। हजारी बाबू उस समय जयपुर के जिलाध्यक्ष भी थे, तथा राष्ट्रदूत के सम्पादक भी, इसलिए उनको अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा। साथ में हरदेव जोशी भी नवयुग के सम्पादक के रूप में आगे काम नहीं कर सके।

पर, जैसा स्वाभाविक ही था, इससे राष्ट्रदूत की राजनीतिक पकड़ या रिपोटिंग कमज़ोर नहीं पड़ी। अतः सुखाड़ियाजी ने, “इमोशनल एप्रोच” काम में ली। हजारी बाबू के पिता रामदयाल जोशी से मिलने पटना गये,

“आप जैसा कहेंगे, वैसा ही करूंगा। पर पढ़ले बता दें किस तारीख से राष्ट्रदूत का प्रकाशन बंद कर दूँ। एक ही राज्य में, अखबार भी चले और अपना उद्योग भी चलाऊँ यह संभव नहीं हो पायेगा।” इस कथन से उद्योग लगाने वाला संवाद तो स्वतः हुआ, पर, सुखाड़िया जी का राष्ट्रदूत कमज़ोर करी अभियान समाप्त नहीं हुआ।

तथा उनसे कहा, “आपका परिवार, पुराना कांग्रेसी परिवार है, “इन्डिपेन्डैंस मूवमेंट” (स्वतंत्रता संग्राम) से भी पहले से। पर, हजारी बाबू, मेरी सरकार (कांग्रेस की सरकार) के खिलाफ हैं। हजारी बाबू की तरह मैं भी आपके पुत्र के समान हूँ। हमारे बीच झगड़े की कोई वजह नहीं। हमारा झगड़ा खत्म करवाइये।” जोशी जी ने भी कूटनीतिक अंदाज में जवाब दिया “दो भाईयों के झगड़े में बड़ों का बोलना उचित नहीं होता।”

सुखाड़िया जी ने फिर उद्योगपति जोशी की दुःखती रा पर हाथ रख़ा और तर्क दिया, “राष्ट्रदूत में कोई कमाई नहीं है, घाटे का सौदा है। आप कोटा आकर बड़ा उद्योग लगाइये, अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप।” यह तर्क काम कर गया, जोशी जी ने पीछा शुरू कर दिया अपने पुत्र का, और सुखाड़िया के “ऑफ़र” पर आमल करने का दवाब बनाने लगे। सैकड़ों चिट्ठियां लिखी हजारी बाबू को, और हर सर्दियों में अपने गांव कौसलों में वार्षिक प्रवास पर आने पर यह व्यक्तिगत प्रयास जारी रक्खा। चौथे–पाँचवें वार्षिक प्रवास के दौरान थक हार कर हजारी बाबू ने कह दिया, “आप जैसा कहेंगे, वैसा ही करूंगा। पर पहले बता दें किस दल से राष्ट्रदूत का प्रकाशन बंद कर दूँ। कह ही राज्य में, अखबार भी चले और अपना उद्योग भी चलाऊँ यह संभव नहीं हो पायेगा।”

इस कथन से उद्योग लगाने वाला संवाद ठही, स्वाभिमानी, सिद्धान्त के मामले में कोई समझौता नहीं करने वाला राष्ट्रदूत का पत्रकार हरदम अलग सा रहा। जिसे पूरी तरह घटाना शुरू कर दिया था। ब्रिटिश इन्फॉर्मेशन सर्विस दक्षिण पूर्वी एशिया में अंग्रेजी सल्लनत के प्रचार तंत्र का स्तम्भ था।कलकत्ते में उनका विशाल, आधुनिक प्रेस था, जहां दक्षिण पूर्वी एशिया के लिए सारी प्रचार सामग्री छपती थी। “वाइलडिंग अग्र प्रक्रिया” के तहत, इस विशाल, प्रेस को बेचने के लिए टेण्डर आमंत्रित किया गये। पर, जब टेण्डर देने की अंतिम तारीख आयी, शहर में साम्प्रदायिक दंगे फैल गये। लेकिन हजारी बाबू अपना ऑफर वाला टेण्डर भर चुके थे। दंगे के कारण दूसरा कोई टेण्डर नहीं मिला गया।

पत्रकार व खबरनवीस को कभी मित्र, कभी विरोधी और सदा “अकम्फर्टबल सवाल” करने वाला माना जाता है, और उसकी “उपयोगिता” के अनुसार उससे व्यवहार होता है। उपयोगिता उस समय के राजनीतिक (परसीव्ड) हित, से आंकी जाती है।

और, मजे की बात यह है कि, राष्ट्रदूत से अपने अजीबोगरीब संबंध को किसी मु.मंत्री ने कैसे “टैकल” किया (निभाया) यह उस राजनेता की स्वयं की “पर्सनैलिटी” व मनःस्थिति पर निर्भर रहा। मु.मंत्री सुखाड़िया ने अपने सत्रह साल के शासन के प्रारम्भिक दिनों में पहले राष्ट्रदूत से राजनीतिक तरीके से निपटने का प्रयास किया। नवयुग अखबार शुरू करवाया, राष्ट्रदूत से मुकाबले के लिए, जिसके सम्पादक थे हरदेव जोशी। हजारी बाबू, स्वयं कांग्रेस में पूर्णतया सक्रिय नेता थे, तथा विधायक भी थे। अतः राष्ट्रदूत में सबसे पहले कांग्रेस की अंदर की खबर छपती थी। नवयुग सुखाड़िया समर्थक होने की वजह से, इतनी निर्भीकता से ये खबरें व विश्लेषण नहीं दे पाता था, अतः पी.सी.सी. में बाकायदा सोच बना कि, कांग्रेस पार्टी में

भुगतान का। राष्ट्रदूत काफी समय तक प्रदेश का सबसे बड़ा अखबार था इसलिए विज्ञापन देना बन्द तो नहीं किया जा सकता था। अतः जो सरकारी विज्ञापन उस स्तर के सब अखबारों को मिलते थे, वो राष्ट्रदूत की झोली में भी आते थे। इन विज्ञापनों में भी 70–80 प्रतिशत जयपुर के बाहर के विभागों के होते थे। इन विज्ञापनों का भुगतान जयपुर के बाहर स्थित सरकार के दफ्तरों, जैसे सार्वजनिक निर्माण, पी.एच.ई.डी. व राजस्थान स्टेट इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड, खान विभाग आदि, के इंजीनियर करते थे। पर विज्ञापन जारी करता था डी.पी.आर. (डायरेक्टर पब्लिक रिलेशन)। डी.पी.आर. विज्ञापन रिलाज करने तक ही अपनी जिम्मेवारी मानता था। इन विज्ञापन का भुगतान दिलवाने में डी.पी.आर. अपनी असमर्थता ही दिखाता था। अतः धीरे–धीरे कालान्त में सरकारी विज्ञापनों की देनदारी करोड़ों में पहुंच गयी और जब राष्ट्रदूत इस बारे में बहुत हल्ला करता तो डी.पी.आर. डिपार्टमेंट को एक रिमाइन्डर भेज देता कि कृपया राष्ट्रदूत के इन बिलों का भुगतान करें। रिमाइन्डरों को काँपी हमें दे दी जाती थी ताकि हम उन भुगतानों का पीछा करें (परस्यू करें)। पर जाली से जैसलमेर, बांसवाड़ा से बाड़मेर तक फैले हजाबों इंजीनियरों व अफसरों का अखबार कैसे पीछा करे। दूसरी ओर अन्य अखबारों को वो विज्ञापन रिलाज होते थे जिनका भुगतान डी.पी.आर. स्वयं ही करता था। उन विज्ञापनों के भुगतान अखबारों के दफ्तरों में स्वयं ही पहुंचा दिये जाते थे।

ऐसी असुविधाएँ ने पिन प्रिक्स (पिन चुभाने वाली) रोजमर्रा की बातें थी। पर शायद मु.मंत्री से मतभेद रखने का यह “जायज़” खामियाजा माना जाता था। लेकिन यह तपन केवल विज्ञापन तक ही सीमित नहीं रहती थी। राष्ट्रदूत के लेबर के सारे छोटे– बड़े मामले हाइकोर्ट तक जाकर ही खत्म होते थे, क्योंकि श्रम विभाग सरकारी महकमा था तथा लेबर कोर्ट का जज, रिटायर्ड न्यायाधीश, सरकार द्वारा नियुक्त होता था। उसका सरकार की ओर देखना कोई अनहोनी बात नहीं थी। अतः राष्ट्रदूत का हर लेबर सम्बन्धित मामला श्रम विभाग होते हुए लेबर कोर्ट में जाकर विपरीत आदेश पाता था, इसलिए हाइकोर्ट जाना लाजमी सा हो जाता था। पर इन मुकदमों के बावजूद हजारी बाबू जी को लोग बड़े आदर व श्रद्धा से देखते थे। इसका सजीव उदाहरण थी, राष्ट्रदूत में एक बार हुई लम्बी हड़ताल, जिसमें प्रिटिंग प्रेस के सभी कर्मचारी, कम्पोजिटर, मशीन मैन, चौकीदार आदि शामिल थे। सम्पादकीय विभाग व दफ्तर के लोग सम्मिलित नहीं थे स्ट्राइक में। जब सवा महीना होने को आया तो कुछ बेचैनी सी फैलने लगी हड़ताल पर गये कर्मचारियों में, क्योंकि महीने के अंत में तनख्वाह नहीं मिली थी। मैनेजमेंट से बात करके, काम पर लौटने की फुसफुसाहट शुरू हुई। जयपुर छोटा शहर था बात फैली तथा मु.मंत्री तक भी पहुंची। मु. मंत्री के प्रतिनिधि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार आर.के. मिश्रा को हड़तालियों के पास भेजा गया, पैसे लेकर यह संदेश देने कि, “वेतन की परवाह मत करो हम देंगे। एक महीने की तनख्वाह की राशी मैं लेकर आया हूँ। अगले महीने और आगे भी देने रहेंगे। पीछे मत हटना।” हड़तालियों ने पैसे रख लिये और रात भर सोच विचार कर सुबह पैसे वापस कर आये।प्रेस के हड़ताली कर्मचारी रात को सर्यू अफसर से मिले तथा मु.मंत्री की ओर से आया प्रस्ताव बताया। हर्दिया जी ने कहा “क्या तुम लोगों को हजारी बाबू से शिकायत है? क्या उनसे बात की? वे घर के, अपने राष्ट्रदूत परिवार के बड़े हैं। कुछ तकलीफ हो

तो उन्हें बताओ। अब तक परिवार के बीच की बात है घर में निपटा दो। अगर बाहर वालों का हस्तक्षेप हुआ तो पता नहीं बात क्या रूख ले ले, और कहाँ जाकर रुके।” हर्दिया जी का परामर्श सबने स्वीकार किया और मु. मंत्री से एक और प्रयास विफल हुआ। सदा “गैर मैत्रीपूर्ण” प्रशासन से घिरे होने के कारण, राष्ट्रदूत की अन्टी, पारदर्शी “मैनेजमेंट स्ट्राइल” विकसित हुई। क्योंकि, राष्ट्रदूत यदि कुछ चालाकी करना या “डण्डी” मारना अपनाता तो इन छिट्रों से, कवच भेदकर

तो उन्हें बताओ। अब तक परिवार के बीच की बात है घर में निपटा दो। अगर बाहर वालों का हस्तक्षेप हुआ तो पता नहीं बात क्या रूख ले ले, और कहाँ जाकर रुके।” हर्दिया जी का परामर्श सबने स्वीकार किया और मु. मंत्री से एक और प्रयास विफल हुआ। सदा “गैर मैत्रीपूर्ण” प्रशासन से घिरे होने के कारण, राष्ट्रदूत की अन्टी, पारदर्शी “मैनेजमेंट स्ट्राइल” विकसित हुई। क्योंकि, राष्ट्रदूत यदि कुछ चालाकी करना या “डण्डी” मारना अपनाता तो इन छिट्रों से, कवच भेदकर

कुछ कम ही लोग हैं जी, व्यक्तिगत सम्बन्धों की वैचारिक मतभिन्नता से प्रभावित नहीं होने देते, जैसे “रैडिकल ढूमजिन्ट” विवाधारा के प्रवर्तक एम.एन. रॉय व हजारी बाबू की मित्रता। कुछ रिश्ते, आदर व सम्मान पर आधारित होते हुए भी, प्रगाढ़ता की स्थिति प्राप्त करते हैं। जैसे यासजी व हजारी बाबू का सम्बन्ध। था केवल शुद्ध दोस्ताना, जैसे रामधारी सिंह दिनकर व बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री विनोदानन्द झा व बरकत साहब से हजारी बाबू की आत्मीयता।

तो उन्हें बताओ। अब तक परिवार के बीच की बात है घर में निपटा दो। अगर बाहर वालों का हस्तक्षेप हुआ तो पता नहीं बात क्या रूख ले ले, और कहाँ जाकर रुके।” हर्दिया जी का परामर्श सबने स्वीकार किया और मु. मंत्री से एक और प्रयास विफल हुआ। सदा “गैर मैत्रीपूर्ण” प्रशासन से घिरे होने के कारण, राष्ट्रदूत की अन्टी, पारदर्शी “मैनेजमेंट स्ट्राइल” विकसित हुई। क्योंकि, राष्ट्रदूत यदि कुछ चालाकी करना या “डण्डी” मारना अपनाता तो इन छिट्रों से, कवच भेदकर

चायल करने का रास्ता सब सरकारें बहुत पहले चुन लेतीं। यह मौका नहीं देना ही, जीवित रहने का गुरुमंत्र था। पर एक अजीबोगरीब “कोरोलरी” (सहयोगी निष्कर्ष) यह भी था, इस स्ट्राइल का कि, कोई साथी, संगी नहीं बना, दिक्कत के समय बगल में खड़ा होने वाला। आदर था, बड़ाई मिली पर दोस्ताना नहीं। यह वैसी ही स्थिति थी कि, हर व्यक्ति साधु का आदर करता है तथा साधु बनने को अति सराहनीय कर्म आंकता है, परंतु साथ ही दिल से चाहता है, कि, उसका खुद का होनहार बच्चा तपस्या करने वन में न जाये। पड़ोसी के बालक का जाना ज्यादा अच्छा है।

असुविधाएँ व पिन प्रिक्स (पिन चुभाने वाली) रोजमर्रा की बातें थीं। पर शायद मु.मंत्री से मतभैद रखने का यह “जायज़” खामियाजा माना जाता था। लेकिन यह तपन केवल विज्ञापन तक ही सीमित नहीं रहती थी। राष्ट्रदूत के लेबर के सारे छोटे– बड़े मामले हाइकीर्ट तक जाकर ही खत्म होते थे, क्योंकि श्रम विभाग सरकारी महकमा था तथा लेबर कोर्ट का जज, रिटायर्ड न्यायाधीश, सरकार द्वारा नियुक्त होता था। उसका सरकार की ओर देखना कोई अनहोनी बात नहीं थी।

लगभग सभी ने राष्ट्रदूत से जुड़ना तो इज्जत व गर्व (ऑनर) की बात मानी, वैचारिक दोस्ती तो मानी, पर “अपराध” में शामिल होने वाला “एका” नहीं पनपा, प्रगाढ़ता नहीं उभरी। वैचारिक मैत्री सबसे पहले चटकती है, समय की संभावित भार के डर से या “परसीव्ड” लाभ की संभावना से। एक अजीब सिद्धान्त पनपा, हमारे दोस्त तो हमारे हैं ही, राष्ट्रदूत का उनसे क्या लेना–देना अखबार कैसे पीछा करे। दूसरी ओर अन्य अखबारों को वो विज्ञापन रिलाज होते थे जिनका भुगतान डी.पी.आर. स्वयं ही करता था। उन विज्ञापनों के भुगतान अखबारों के दफ्तरों में स्वयं ही पहुंचा दिये जाते थे।

ऐसी असुविधाएँ ने पिन प्रिक्स (पिन चुभाने वाली) रोजमर्रा की बातें थी। पर शायद मु.मंत्री से मतभेद रखने का यह “जायज़” खामियाजा माना जाता था। लेकिन यह तपन केवल विज्ञापन तक ही सीमित नहीं रहती थी। राष्ट्रदूत के लेबर के सारे छोटे– बड़े मामले हाइकोर्ट तक जाकर ही खत्म होते थे, क्योंकि श्रम विभाग सरकारी महकमा था तथा लेबर कोर्ट का जज, रिटायर्ड न्यायाधीश, सरकार द्वारा नियुक्त होता था। उसका सरकार की ओर देखना कोई अनहोनी बात नहीं थी। अतः राष्ट्रदूत का हर लेबर सम्बन्धित मामला श्रम विभाग होते हुए लेबर कोर्ट में जाकर विपरीत आदेश पाता था, इसलिए हाइकोर्ट जाना लाजमी सा हो जाता था। पर इन मुकदमों के बावजूद हजारी बाबू जी को लोग बड़े आदर व श्रद्धा से देखते थे। इसका सजीव उदाहरण थी, राष्ट्रदूत में एक बार हुई लम्बी हड़ताल, जिसमें प्रिटिंग प्रेस के सभी कर्मचारी, कम्पोजिटर, मशीन मैन, चौकीदार आदि शामिल थे। सम्पादकीय विभाग व दफ्तर के लोग सम्मिलित नहीं थे स्ट्राइक में। जब सवा महीना होने को आया तो कुछ बेचैनी सी फैलने लगी हड़ताल पर गये कर्मचारियों में, क्योंकि महीने के अंत में तनख्वाह नहीं मिली थी। मैनेजमेंट से बात करके, काम पर लौटने की फुसफुसाहट शुरू हुई। जयपुर छोटा शहर था बात फैली तथा मु.मंत्री तक भी पहुंची। मु. मंत्री के प्रतिनिधि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार आर.के. मिश्रा को हड़तालियों के पास भेजा गया, पैसे लेकर यह संदेश देने कि, “वेतन की परवाह मत करो हम देंगे। एक महीने की तनख्वाह की राशी मैं लेकर आया हूँ। अगले महीने और आगे भी देने रहेंगे। पीछे मत हटना।” हड़तालियों ने पैसे रख लिये और रात भर सोच विचार कर सुबह पैसे वापस कर आये।प्रेस के हड़ताली कर्मचारी रात को सर्यू अफसर से मिले तथा मु.मंत्री की ओर से आया प्रस्ताव बताया। हर्दिया जी ने कहा “क्या तुम लोगों को हजारी बाबू से शिकायत है? क्या उनसे बात की? वे घर के, अपने राष्ट्रदूत परिवार के बड़े हैं। कुछ तकलीफ हो

तो उन्हें बताओ। अब तक परिवार के बीच की बात है घर में निपटा दो। अगर बाहर वालों का हस्तक्षेप हुआ तो पता नहीं बात क्या रूख ले ले, और कहाँ जाकर रुके।” हर्दिया जी का परामर्श सबने स्वीकार किया और मु. मंत्री से एक और प्रयास विफल हुआ। सदा “गैर मैत्रीपूर्ण” प्रशासन से घिरे होने के कारण, राष्ट्रदूत की अन्टी, पारदर्शी “मैनेजमेंट स्ट्राइल” विकसित हुई। क्योंकि, राष्ट्रदूत यदि कुछ चालाकी करना या “डण्डी” मारना अपनाता तो इन छिट्रों से, कवच भेदकर

तो उन्हें बताओ। अब तक परिवार के बीच की बात है घर में निपटा दो। अगर बाहर वालों का हस्तक्षेप हुआ तो पता नहीं बात क्या रूख ले ले, और कहाँ जाकर रुके।” हर्दिया जी का परामर्श सबने स्वीकार किया और मु. मंत्री से एक और प्रयास विफल हुआ। सदा “गैर मैत्रीपूर्ण” प्रशासन से घिरे होने के कारण, राष्ट्रदूत की अन्टी, पारदर्शी “मैनेजमेंट स्ट्राइल” विकसित हुई। क्योंकि, राष्ट्रदूत यदि कुछ चालाकी करना या “डण्डी” मारना अपनाता तो इन छिट्रों से, कवच भेदकर

हजारी बाबू की आत्मीयता। ऐसे रिश्ते सबसे नहीं हो सकते, यह, शायद मजबूरी थी राष्ट्रदूत की। वो लोग खरे नहीं उतरे, जिनसे आशा नहीं थी कि वो मौके पर निराश करेंगे। जैसे पूर्व संपादक शिव पूजन त्रिपाठी व दिनेश खरे। इसलिए , जोधपुर के रंगरेली काण्ड, जिसमें उस समय के महारथी, पेट्रोल पम्प भूखला के मालिक तान्बी, कन्हैया लाल जैन, मुना लाल गोयल आदि संलग्न बताये जा रहे थे, में जब त्रिपाठी जी की भूमिका संदिग्ध मानी गई, तो भारी आघात पहुंचा।

खरे साहब, बनारस के “आज” अखबार से राष्ट्रदूत में आये थे। एक प्रतिभाशाली अनुभवी पत्रकार थे तथा राष्ट्रदूत का सम्पादक बनने की योग्यता रखते थे। पर “मॉरल टर्पिट्युड” (नैतिक परंपरा का उल्लंघन) का आरोप लगा था, स्थानीय अखबारों में, जैसे, दैनिक मशाल। यह क्षम्य हो जाता हजारी बाबू की ओर से, हालाँकि, हजारी बाबू जयपुर के “कंज़रवेटिव व्यक्तित्व” से भली भांति परिचित थे।